



e-ISSN:2582 - 7219



INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

Volume 5, Issue 2, February 2022



INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 5.928



9710 583 466



9710 583 466



ijmrset@gmail.com



www.ijmrset.com



समकालीन भारतीय समाज में वृद्धाओ की सामाजिक-आर्थिक दशाएँ एवं समस्याएँ : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

Dr. Shashi Bala

Associate Professor, Dept. of Sociology, Shri Lal Bahadur Shastri Degree College, Gonda (Avadh), India

सारांश

जन्म से मृत्यु तक मानव का जीवन शारीरिक विकास की एक प्रक्रिया है। जो कुछ पूर्व निर्धारित चरणों से होकर गुजरता है। ये चरण हैं: शैशव अवस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, युवा अवस्था, वयस्क या प्रौढ़ावस्था तथा वृद्धावस्था जिसमें जन्म (या गर्भधारण) से लेकर किशोरावस्था तक की प्रक्रिया तीव्र विकास या निर्माण की प्रक्रिया है। यह विकास, निर्माण एवं संग्रहण का दौर है। युवावस्था में विकास प्रक्रिया धीमी पड़ने लगती है और प्रौढ़ावस्था तक पहुँचते-पहुँचते लगभग थम जाती है। युवा अवस्था से प्रौढ़ावस्था तक का दौर जैविक, सामाजिक व आर्थिक दृष्टियों से उत्पादन, दायित्व निर्वाह या जो कुछ पूर्व में संचित या संग्रहित किया गया है, उसे लौटाने या खर्च करने का दौर है। वृद्धावस्था जीवन प्रक्रिया का अंतिम चरण है। यह शारीरिक एवं सामाजिक दृष्टि से ह्रास का दौर है जिसमें व्यक्ति न केवल शारीरिक व मानसिक दृष्टि से कमजोर होता जाता है अपितु सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से शक्ति हीन व संदर्भ हीन भी होता जाता है।

किस आयु को वृद्धता की पहचान का आधार माना जाये, यह बहुत कुछ हद तक जीवन की गुणवत्ता व स्वास्थ्य की दशा पर निर्भर करता है। वैसे कई देशों में 65 वर्ष की आयु के ऊपर के व्यक्ति को वृद्ध कहा जाता है। जहाँ तक भारत का सवाल है हम इस बात को ध्यान में रख सकते हैं कि किस आयु को सरकार सेवानिवृत्ति की आयु निर्धारित करती है। अर्थात् किस आयु को पूरा करने पर वह कर्मचारी को शारीरिक व मानसिक दृष्टि से सेवा के लिये उपयोगी न मानते हुए उसे सेवानिवृत्त कर उसकी पिछली सेवाओं के उपलक्ष्य में गुजारे के लिये उसे पेंशन अदा करती है। इस दृष्टि से हम देखते हैं कि पहले यह आयु 55 वर्ष थी। आगे चलकर इसमें वृद्धि की गई और यह 58 वर्ष हो गई। वर्तमान में यह आयु 60 वर्ष है। इसलिए वर्तमान में इसे वृद्धावस्था की पहचान का विश्वसनीय आधार माना जा सकता है। संयुक्त राष्ट्र संघ का भी मानना है कि 60 वर्ष की आयु से आगे की ओर बढ़ाव जनसंख्या के बुजुर्गियत या वृद्धावस्था की ओर गमन की पहचान है। अतः वृद्ध से यहाँ हमारा आशय उस व्यक्ति से है जिसने 60 वर्ष की आयु पार कर ली है। इस दृष्टि से साठ वर्ष तक की आयु के व्यक्तियों की पहचान नई पीढ़ी और उससे अधिक आयु के व्यक्तियों की पहचान पुरानी पीढ़ी के रूप में की जा सकती है।

52वें नेशनल सैम्पल सर्वे (1995- 96) के अनुसार उम्रदराज लोगों में दीर्घकालिक रोगी की मौजूदगी बहुत अधिक पाई गई। ग्रामीण क्षेत्रों (25 प्रतिशत) के मुकाबले शहरों इलाकों (55 प्रतिशत) में इस आयुवर्ग के लोगों को ये रोग अधिक थे। वृद्ध लोगों में सबसे गंभीर रोग था- 'जोड़ों की समस्या'। इससे ग्रामीण इलाकों में 38 प्रतिशत और शहरी क्षेत्रों में 43 प्रतिशत उम्रदराज लोग प्रभावित थे। ग्रामीण इलाकों में पुरुषों के मुकाबले महिलाएँ 'जोड़ों के समस्या' से ज्यादा ग्रस्त पाई गई। ग्रामीण इलाकों में 40 और शहरी इलाकों में 35 प्रतिशत उम्रदराज लोग किसी न किसी प्रकार की शारीरिक अक्षमता (दिखने, सुनने व बोलने इत्यादि से संबंधित) से ग्रस्त पाए गए।

परिचय

वृद्धों की समस्याएँ इस प्रकार से हैं--

1. शारीरिक दुर्बलता

आयु बढ़ने के साथ व्यक्ति का शरीर शिथिल होने लगता है। इन्द्रियाँ कमजोर होने लगती हैं। आँखों से दिखना कम हो जाता है। कान से कम सुनाई पड़ने लगता है। दाँत कमजोर हो जाते हैं। शरीर को शक्ति व गति प्रदान करने वाले प्रमुख संस्थान जैसे पाचन संस्थान, रक्त, परिभ्रमण संस्थान, स्वशन संस्थान आदि कमजोर पड़ने लगते हैं। शरीर में अनेक बीमारियाँ जैसे रक्तचाप में



व्यक्तिक्रम, हृदय रोग, डायबिटीज, जीर्ण रोग, स्पाण्डलायटिस, जोड़ों का दर्द, गठिया, प्रोस्टेट ग्लैण्ड का बढ़ना, अस्थना आदि आ जाती है। व्यक्ति की कार्यशक्ति घट जाती है।

2. मानसिक रोग

अस्वस्थता, शारीरिक क्षीणता व मानसिक रोग बहुत कुछ साथ-साथ चलते हैं। शरीर के कमजोर पड़ने के बाद बुढ़ापे की अनुभूति ही व्यक्ति में मानसिक निराशा का संचार करती है। वृद्ध व्यक्ति शारीरिक रूप से ही नहीं अपितु मानसिक रूप से भी अपने को बहुत असहाय महसूस करता है। बुढ़ापे की मानसिकता और निरूपायता के अहसास से उसके मन में हताशा घर करने लगती है जिससे उसमें संवेगात्मक अस्थिरता उत्पन्न होती है। उसकी स्मरण शक्ति कमजोर पड़ने लगती है। शारीरिक कार्यक्षमता घटने और सामाजिक उपयोगिता कम होने के साथ वृद्ध व्यक्ति को अनेक मानसिक चिन्ताएँ घेर लेती है जिससे उसकी नींद कम हो जाती है और वह मानसिक थकावट महसूस करने लगता है। [1,2]

3. आर्थिक असुरक्षा की स्थिति

वृद्ध लोगों को प्रायः आर्थिक सुरक्षा संबंधी तनाव का भी सामना करना पड़ता है। पारिवारिक आय कम होने से परिवार के लोग बुजुर्गों को प्रायः भार स्वरूप देखने लगते हैं।

5. संयुक्त परिवार के अभाव की समस्या

बुजुर्ग जनों को संयुक्त परिवार के अभाव की समस्या का भी सामना करना पड़ता है। संयुक्त परिवार में वृद्धावस्था, बीमारी आदि के समय सुरक्षा प्रदान की जाती है, वहीं एकाकी परिवार में व्यक्ति अपने परिश्रम से प्राप्त फल पर निर्भर रहकर वृद्धावस्था अथवा बीमारी के समय अपनी जीविका चलाता है।

6. उचित देखभाल की समस्या

जिस परिवार में कई सदस्य होते हैं, वहां तो बड़े बुजुर्गों की देखभाल ठीक तरह से हो जाती है, लेकिन एकाकी परिवार की स्थिति में जब घर के सदस्य चले जाते हैं, तो अक्सर बुजुर्ग लोगों की देखभाल करने वाला कोई नहीं होता है, इससे उन्हें कभी-कभी बड़ी बाधा का सामना करना पड़ता है।

विश्व तथा भारतीय जनांकिकी का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि वृद्धों की जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है। इससे इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता कि आगे आने वाले दिनों में जनसंख्या के अनुपात में वृद्ध अधिक होते जाएंगे। स्वाभाविक तौर पर इनकी समस्याओं में वृद्धि होगी। इस दृष्टि से यह आवश्यक है कि वृद्धों की समस्याओं के समाधान के लिए प्रयास किए जाएँ। वृद्धों की समस्याओं के समाधान हेतु निम्न प्रयास किये जा सकते हैं--

1. भारत में संयुक्त परिवार व्यवस्था वृद्धों को सामाजिक, आर्थिक एवं मानसिक सुरक्षा प्रदान करती रही है। अतः इसके विघटन को रोकने के लिये प्रयास किये जाने चाहिये।[3,4]
2. परम्परागत भारतीय समाज में सामुदायिक जीवन वृद्धों को उनकी किसी भी समस्या का एहसास नहीं होने देता था। अतः ऐसे सामुदायिक जीवन को पुनः मजबूत करने के उपाय किये जाने चाहिये।
3. वृद्धों के लिये स्वस्थ मनोरंजन के साधन उपलब्ध कराये जाने चाहिए।



4. वृद्धों की समस्या के समाधान हेतु यह भी बहुत ही जरूरी है की हम वृद्धवस्था को जीवन की अनिवार्यता के रूप में स्वीकार करें, न कि बोझ के रूप में।
5. समय समय पर वृद्धों के लिये विशेष आयोजन जैसे-- सामान्य ज्ञान या खेल प्रतियोगितायें और कार्यशालाओं का आयोजन आदि किया जाना चाहिये।
6. सरकार की ओर से वृद्धों के लिये "वृद्ध होम" स्थापित करने चाहिए जिनमें समुचित सुविधायें हों। ऐसी संस्थाओं को सरकार की ओर से सहायता दी जानी चाहिये।
7. वृद्धों की स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं के लिये निःशुल्क व्यवस्था की जानी चाहिए। साथ ही वरिष्ठ नागरिकों के लिये बहुत कम प्रीमियम पर स्वास्थ्य बीमा व्यवस्था शुरू की जानी चाहिए।
8. वृद्धावस्था पेंशन योजना की राशि बढ़ाई जानी चाहिए।[5,6]
9. शिक्षित वृद्धों के अनुभवों का लाभ प्रौढ़ शिक्षा जैसी योजनाओं के लिये जाना चाहिए एवं अंशकालीन रोजगार दिये जाने की व्यवस्था भी की जानी चाहिए जिससे वृद्धजन व्यस्त रहें।
10. वृद्धों के लिये पारिवारिक माहौल की व्यवस्था की जानी चाहिए। केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड ने वृद्ध सदनों एवं पालनाघरों को मिलाकर एक ही स्थान पर संचालित करने की योजना बनाई है जिससे वृद्धजनों को बच्चों की गतिविधियों का आनन्द मिल सके और वे जीवन रस का सम्पूर्ण आनन्द ले सकें।

विचार – विमर्श

आज बुजुर्ग की समस्या अकल्पनीय है. वृद्धावस्था अभिशाप सदृश होती जा रही है. उनका जीवनयापन बहुत ही कठिन होता जा रहा है. कोई चलने में असमर्थ तो कोई अपाहिज सदृश बेड को ही अपनी नियति मानकर जीवन निर्वाह कर रहे हैं. यदि वे उच्च वर्गीय हैं तो उनकी संतान ने नर्स या अटेंडेंट की व्यवस्था कर दिया है. उन लोगों का जीवन भौतिक सुख- सुविधा से परिपूर्ण हो, फिर भी समय किस तरह व्यतीत करें इसकी समस्या उन्हें आहत करती है. आँखें साथ नहीं देती जिसके कारण वे पढ़ नहीं पाते, दूरदर्शन पर कार्यक्रम भी देखना कठिन होता है. आखिर करें तो करें क्या ? जिन बच्चों के लालन-पालन में उनका सारा जीवन व्यतीत हो गया वे बच्चे अपने परिवार में ही व्यस्त हैं. कोई विदेश में तो कोई अपने देश में ही व्यस्त हैं. कुछ मज़बूरीवश लाचार हैं तो कुछ माता-पिता के कर्तव्य से विमुख. बेचारे बुजुर्गों का शेष जीवन अधीरता या व्याकुलता से प्रतीक्षारत घर के दहलीज़ पर टक-टकी बाँधे रहते हैं कि कोई तो आये जिससे दो बातें कर लें. समस्या यह है लोग इन बुजुर्गों के पास बैठना या बातें करना समय की बाँदी समझते हैं. उन्हें यह समझ नहीं आती की जीवन जीने की कला, कितनी महत्वपूर्ण बातें जो बुजुर्गों से सीखी जा सकती है, वे उन से वंचित रह जाते हैं. समाज का रूप ही परिवर्तित हो रहा है. दादी-नानी की कथा लुप्तप्राय हो गई है क्योंकि नर्सरी से जो बोझ बच्चों पर डाल दी जाती है, बच्चे उसमें दब से गए हैं. उन्हें वक्त कहाँ कि दादी-नानी की कथा या सीख सुने. मुझे याद है मेरे पड़ोस में एक अम्माजी रहा करती थी. उनके घर में अपार वैभव था. उमका बेटा- बहू उसी शहर में अलग घर में रहते थे. शाम को बेटा अपनी माँ का हाल लेने आता था मात्र दस-पंद्रह मिनट के लिए. अम्माजी का ध्यान द्वार पर ही केंद्रित रहता था अपने बेटे की प्रतीक्षा में. व्याकुल रहती थी किसी से मन की बात करने के लिए. और बुजुर्गों से तो उनकी स्थिति बेहतर ही थी. मध्यमवर्गीय बुजुर्गों की स्थिति और भी दयनीय है. यहाँ भी समयाभाव. आज के आपाधापी युग में उनकी संताने संघर्ष कर रही हैं. अपने को उच्च वर्ग में लाने के लिए. अपने माता-पिता के लिए उनके पास भी समय नहीं है. बस वे आगामी भविष्य के लिए अर्थात् वे अपनी संतानों कि परवरिश में ही समय व्यतीत कर रहे हैं. [7,8]

अपने बहुमूल्य समय में माता-पिता के लिए समय देना तो नादाना ही हुआ न? अब उनकी क्या उपयोगिता? उनसे क्या लाभ जो अपने समय का दुरुूपयोग करेगा ! बेचारे बुजुर्ग उपेक्षित जीवन जी रहे हैं. पड़ोस की दया पर निर्भर रहते हैं. उनकी बिडम्बना यह है कि न तो वे अपनी स्थिति के विषय में कुछ कह सकते हैं, अपने बच्चों की कमी को अनदेखी तो कर सकते हैं. लेकिन किसी को



कुछ कह नहीं सकते हैं. समाज में अपनी संतानों कि छवि को कम नहीं करना चाहते फलतः घुट-घुट कर जी रहे हैं. मध्यमवर्ग की सबसे अधिक बिडम्बना है दिखावा. चाहे वे उच्च माध्यमवर्गीय हों या निम्न मध्यमवर्गीय. झूठी शान के लिए वे अपना जीवन उत्सर्ग कर रहे हैं. या तो युवा हों या बुजुर्ग समाज में सबसे दयनीय स्थिति इन्हीं वर्गों की हैं. वे सांस तो ले रहे हैं लेकिन स्वच्छ हवा में नहीं. संघर्षमय जीवन ही इस वर्ग की पहचान है. बुजुर्ग की स्थिति अत्यंत ही दारुण है. सरकार ने वृद्धाश्रम जगह-जगह खोल तो रखा है लेकिन पर्याप्त नहीं है. इस वर्ग के वृद्ध आश्रम में जाना भी नहीं चाहते क्योंकि इनके बच्चों की बदनामी न हो. आर्थिक दृष्टि से कमजोर या निम्न वर्ग के मनुष्य का जीवन ही आभाव से आरम्भ होकर अंत भी तड़प-तड़प कर समाप्त हो जाता है. इनके बच्चे स्वयं ही मजदूरी या किसी तरह जीवन यापन करते हैं. इस वर्ग के वृद्धों की न तो अपेक्षा है न इच्छा. कष्टमय जीवन व्यतीत करना ही इनका भाग्य है. वृद्धजन कम से कम आँखों के सामने अपने बच्चों को देखते तो हैं. आधी पेट खा कर खाट पर लेट कर बच्चों की राह ताकना प्रातःकाल से रात्रि तक प्रतीक्षा में ही व्यतीत हो जाता है. लेकिन बच्चों के दुःख तथा स्वयं की असमर्थता में तिल-तिल कर मरते रहते हैं. आशय यह है कि कोई भी वर्ग हो अधिकांश वृद्ध की स्थिति चिंतनीय ही है. इसके जिम्मेदार कहीं न कहीं एकल परिवार भी है. आज प्राथमिकताएं बदल रही है. मानव माता-पिता के कर्तव्य से विमुख हो रहा है. आवश्यकताएं सीमाहीन हो गयी हैं, आकाश की तरह अनंत हो गयी है. जिसमें जन्मदाता माता-पिता कि उपस्थिति व्यर्थ है. मैं सुधीजनों से क्षमा-प्रार्थी हूँ क्योंकि कुछ मानव तो ऐसे निर्दयी, नृशंस नहीं हैं जो स्वयं के माता-पिता को बोझ समझें. मैं समाज के अधिकांश लोगों की बात कर रही हूँ सब की नहीं. प्रत्येक मानव की प्राथमिकता सर्वप्रथम अपने माता-पिता की देख-भाल, सम्मान होनी चाहिए. उन्हें आहत या अनदेखी नहीं करनी चाहिए. यदि वे संतुष्ट रहेंगे तो उनके आशीर्वाद से ही हमारा आगत भविष्य सुखमय हो जायेगा. अतः आज से हम सभी प्रण लें कि माता-पिता या किसी भी वृद्धों का दिल नहीं दुखायेंगे उन्हें उचित सम्मान देंगे. हरेक मानव का जन्म ही एक न एक दिन बुजुर्ग होने के लिए हुआ है. किसी पर आश्रित होना ही है. अतः यह एहसास नहीं होने देना है कि वे वृद्ध हो गए हैं वल्कि उनके मनोबल को ऊँचा उठाना है. मेरी राय तो यह है कि जहाँ 'बुजुर्ग पूजित होते हैं वहाँ देवता का निवास होता है. यही मेरा इस नव वर्ष पर प्रतिज्ञा है. और सभी से इस प्रतिज्ञा का पालन करने का अनुरोध है. अपने समाज में सभी आदरणीय बुजुर्गों का सम्मान करने संकल्प लेती हूँ.[9,10]

जनगणना के आंकड़ों के अनुसार, 1995 में ग्रामीण भारत में वृद्धों की मृत्यु के तीन सबसे बड़े कारण श्वासनली-शोथ / दमा (25.8 प्रतिशत), दिल का दौरा (13.2 प्रतिशत) और लकवा (8.5 प्रतिशत) रहे हैं। भारत में 10 प्रतिशत से अधिक वृद्ध विषादग्रस्त हैं और इस आयुवर्ग के 40-50 प्रतिशत लोगों को अपने जीवन की संध्या में कभी न कभी मनोचिकित्सीय या मनोवैज्ञानिक की आवश्यकता होती है।

परिणाम

बुढ़ापा जीवन की एक अनिवार्य प्रक्रिया है। वृद्ध वैश्विक आबादी जनसांख्यिकीय संक्रमण का एक उप-उत्पाद है जिसमें मृत्यु दर और प्रजनन दर दोनों में गिरावट आती है। एक देश में बुजुर्गों की आबादी में अचानक उछाल समाज के सामने कई चुनौतियों का सामना करने के लिए बाध्य है। एजिंग कल्याण चिंता के दायरे से परे चला गया है, और इसे एक विकासात्मक चुनौती के रूप में देखा जाना चाहिए। भारत में 8.2% बुजुर्ग हैं (जो 60 वर्ष से अधिक आयु के पुरुष हैं) और भारत में 9.0% बुजुर्ग महिला आबादी (भारत की जनगणना, 2011)। कुल मिलाकर, 2001 की जनगणना की तुलना में बुजुर्गों का प्रतिशत 8.6% है, जो कि 7.4% था। इसलिए भारत एक जनसांख्यिकीय संक्रमण का सामना कर रहा है, जिसका प्रभाव व्यक्ति, परिवार, समुदाय, समाज और बड़े स्तर पर होगा।[11,12]

राष्ट्रीय समाज रक्षा संस्थान पिछले एक दशक से वृद्धों की देखभाल सहित समाज रक्षा के क्षेत्र में प्रशिक्षण प्रदान करने में सक्रिय रहा है। संस्थान का वृद्धों की देखभाल प्रभाग अनेक प्रोग्रामों /प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रमों की एक श्रंखला चलाता है जिसका लक्ष्य है:

- वृद्ध व्यक्तियों की देखभाल एवं कल्याण के लिए प्रोफेशनलों का एक कैडर विकसित करना
- वृद्धों की देखभाल (जेरियेटिक केयर) से संबंधित विविध आयामों पर एक व्यापक एवं वैज्ञानिक ज्ञान का भंडार उपलब्ध कराना
- वृद्ध व्यक्तियों के कल्याण हेतु परिवार एवं समुदाय की सेटिंग में हस्तक्षेप पर आधारित कुशल मानव शक्ति प्रदान करना
- प्रोग्राम डेवलपमेंट एवं मैनेजमेंट पर जोर देते हुए वृद्धों की देखभाल के प्रबंधन हेतु तकनीकी/हस्तक्षेपों पर छात्रों को जोड़ना
- वृद्ध व्यक्तियों की देखभाल के लिए सपोर्ट सिस्टम तथा नेटवर्किंग की पहचान करना तथा विकसित करना
- स्थानीय तथा राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर सरकारी/गैर सरकारी सेक्टरों की सेवाओं के अभिसरण को उपलब्ध कराना
- संस्थान स्वयं के साथ साथ क्षेत्रीय संसाधन प्रशिक्षण केन्द्र (आर.आर.टी.सी) तथा अन्य प्रतिष्ठित संगठनों के साथ मिलकर कोर्सिंग संचालित करता है। वर्तमान में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय विभाग द्वारा वृद्धों की देखभाल

शादी से पहले जो बेटा काम या ऑफिस से वापस आकर मां-बाप से दिन भर का हाल चाल पूछता था, वही बेटे अब परायों से व्यवहार करते अधिकतर घरों में दिखाई देते हैं। ऑफिस से घर आने के बाद बच्चे अपनी दुनिया में मस्त होकर जी रहे हैं वे यह भी



भूल जाते हैं कि बचपन में उन्ही माता-पिता के बिना उनको चैन नहीं आता था। बेटे अगर शादी शुदा हैं तो अपने परिवार में मस्त और अगर शादी नहीं की है, तो घर आकर मोबाइल और सोशल मीडिया ही जैसे उनका परिवार है।[13,14]

निष्कर्ष

हमारी संस्कृति में बड़े-बुजुर्गों के सम्मान की परंपरा रही है। बचपन में जब कभी बच्चों को अपने से बड़ों से कुछ ऊंची आवाज में बात करते देखा जाता था, तो यही नसीहत दी जाती थी कि उनसे सम्मान से पेश आओ। किंतु बदलते समय और जीवन मूल्यों के कारण अब स्थिति यहां तक पहुंच गई है कि बुजुर्ग हमारे समाज में हाशिए पर जाने लगे हैं। उन्हें फालतू समझा जाने लगा है। ओल्ड एज होम्स की बढ़ती संख्या भी यही इशारा करती है कि समाज में बुजुर्गों की स्थिति अधिक अच्छी नहीं है। कुछ ऐसी बातें एक सर्वे में भी सामने आई हैं। बढ़ती संख्या, बदलता सामाजिक परिवेश और बदलती पारिवारिक स्थितियों ने परिवार के बुजुर्गों के लिए जिंदगी को और दुश्वार कर दिया है। घर के बुजुर्गों और नए परिवार बसाते बच्चों के बीच एक दूरी-सी पैदा हो गई है। और ये दूरी गांव और छोटे कस्बों से ज्यादा शहरों में देखने को मिलती है। जिंदगी के इस वक्त जब उम्र की शाम होने लगती है, तो अधिकतर घरों में बुजुर्गों की अनदेखी कर दी जाती है, और बेकार का सामान समझ कर या तो घर के कोने में या ओल्ड एज होम में रवाना कर दिया जाता है, बुजुर्गों की अनदेखी उनके लिए मानसिक अवसाद की वजह बन जाती है। इस बेरहम स्थिति के लिए आखिर कौन जिम्मेदार है?[15,16]

44% बुजुर्गों ने यह कहा कि सार्वजनिक स्थानों पर उनके साथ बुरा व्यवहार किया जाता है। 53% बुजुर्गों का कहना है कि भारतीय समाज बुजुर्गों के साथ भेदभाव करता है। > 70% बंगलुरु के बुजुर्गों का कहना है कि पार्क में टहलना तक उनके लिए किसी बुरे सपने की तरह होता है। वृद्धों के लिए दुनिया की सबसे बेहतरीन और दुनिया की सबसे खराब जगहों की वैश्विक रैंकिंग में स्विटजरलैंड का नाम सबसे अच्छी जगह और भारत का नाम सबसे खराब जगह में शुमार किया गया है। हेल्पेज इंटरनेशनल नेटवर्क ऑफ चैरिटीज की ओर से तैयार ग्लोबल एज वॉच इंडेक्स में 96 देशों में भारत को 71वां स्थान दिया गया। पूरे संसार में शायद भारत ही एक ऐसा देश है, जहां तीन पीढ़ियां सप्रेम एक ही घर में रहती थीं। आज स्थिति बिलकुल उलट है। ऐसे पीड़ित बुजुर्गों के संरक्षण के लिए कानून है, लेकिन जानकारी के अभाव और बदनामी के डर से बुजुर्ग कानून का सहारा लेने से हिचकते हैं।[17,18]

संदर्भ

1. अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन का प्रकाशन मैनुअल, छठा संस्करण (अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन, 2009) ISBN 1433805618
2. ^ "सेनेसेंस - द फ्री डिक्शनरी द्वारा सेनेसेंस की परिभाषा" | Thefreedictionary.com . 2016-04-04 को लिया गया ।
3. ^ "जेरोन्टोलॉजी - द फ्री डिक्शनरी द्वारा जेरोन्टोलॉजी की परिभाषा" | Thefreedictionary.com . 2016-04-04 को लिया गया ।
4. ^ "जेरियाट्रिक्स - द फ्री डिक्शनरी द्वारा जराचिकित्सा की परिभाषा" | Thefreedictionary.com . 2016-04-04 को लिया गया ।
5. ^ "जेरेमी हंट 'क्रोनिकली एकाकी' की दुर्दशा पर प्रकाश डालता है - बीबीसी न्यूज़"। बीबीसी समाचार । बीबीसी.को.यूके. 2013-10-18 | 2016-04-04 को लिया गया ।
6. ^ बुढ़ापा । ऑक्सफोर्ड संदर्भ। 2006. डोई : 10.1093/एकड़/9780198568506.001.001 | आईएसबीएन 9780198568506. 2016-04-04 को लिया गया ।
7. ^ "वृद्ध व्यक्तियों के मानवाधिकार" . ओएचसीएचआर.ओआरजी । मानवाधिकार के लिए संयुक्त राष्ट्र उच्चायुक्त का कार्यालय ।
8. ^ बैरी, पेट्रीसिया. "मेडिकेयर पात्रता आवश्यकताएँ - मेडिकेयर के लिए योग्यता कैसे प्राप्त करें - AARP हर ..." AARP | 2016-04-13 को लिया गया ।
9. ^ "बुढ़ापा" । ब्रिटानिका डॉट कॉम । 2016-04-04 को लिया गया ।
10. ^ शेरबोव, सर्गेई; सैंडरसन, वारेन (2019)। "जनसंख्या उम्र बढ़ने के नए उपाय" (पीडीएफ)। संयुक्त राष्ट्र । 21 दिसंबर 2021 को लिया गया ।
11. ^ कोवल, पॉल; पीची, करेन (जून 2001)। "उम्र बढ़ने पर न्यूनतम डेटा सेट परियोजना के लिए संकेतक: उप-सहारा अफ्रीका में एक महत्वपूर्ण समीक्षा" (पीडीएफ) । विश्व स्वास्थ्य संगठन (रिपोर्ट)। पी। 9 . 1 दिसंबर 2021 को लिया गया ।
12. ^ गोर्मन एम। विकास और वृद्ध लोगों के अधिकार। इन: राउडेल जे, एट अल।, एड। उम्र बढ़ने और विकास रिपोर्ट: गरीबी, स्वतंत्रता और दुनिया के बुजुर्ग। लंदन, अर्थस्कैन पब्लिकेशंस लिमिटेड, 1999:3-21



13. ^ बर्क, लौरा ई। (2010)। जीवन काल के माध्यम से विकास (5 वां संस्करण)। एलिन और बेकन। आईएसबीएन 9780205687930.
14. ^ टॉर्पी, जेनेट एम.; लिनम, कैसियो; ग्लास, रिचर्ड एम। (2006)। "पुराने वयस्कों में कमजोरी"। जामा। **296** (18): 2280. डोई : 10.1001/jama.296.18.2280 | पीएमआईडी 17090776 |
15. ^ फॉर्मन, डीई; बर्मन, एडी; मैककेबे, सीएच; बेम, डी एस ; वेई, जेवाई (1992)। "बुजुर्गों में पीटीसीए: "युवा-बूढ़ा" बनाम "बूढ़ा-बूढ़ा" ". जर्नल ऑफ़ द अमेरिकन जेरियाट्रिक्स सोसाइटी। **40** (1): 19-22 | doi : 10.1111 /j.1532-5415.1992.tb01823.x | PMID 1727842 | S2CID 10617191 |
16. ^ ज़िज़ा, सीए; एलिसन, केजे; वर्नेट, सीएम (2009)। "सामुदायिक-जीवित मध्यम-पुराने और सबसे पुराने-पुराने वयस्कों का कुल जल सेवन"। जेरोन्टोलॉजी सीरीज़ ए: बायोलॉजिकल साइंसेज एंड मेडिकल साइंसेज के जर्नल। **64ए** (4): 481-486। डोई : 10.1093/गेरोना/gln045 | पीएमसी 2657166 | पीएमआईडी 19213852 |
17. ^ "उम्र बढ़ने की जनसांख्यिकी" . ट्रांसजेनरेशनल.ऑर्ग . 2016-04-04 को लिया गया |
18. ^ सिसिरेली, विक्टर जी। (2002)। मृत्यु पर वृद्ध वयस्कों के विचार । स्प्रिंगर पब। आईएसबीएन 9780826170125.



INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor:
5.928

ISSN

INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA



INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY



9710 583 466



9710 583 466



ijmrset@gmail.com

www.ijmrset.com